गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

मासिक
गोलालारीय दर्शन
सफलता के 10 वर्ष
लेट पोस्टिंग

अपनों के साथ अपनी बातें

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 10 अंक : 6 पृष्ठ संख्या : 8 माह – 15 अप्रैल 2019 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

जैन समाज की घटती जनसंख्या, समाज के लिए विचारणीय ?

हाल ही में संपन्न हुए कार्यक्रम में इन्दौर समाज के विशिष्ट जनों ने एक महत्वपूर्ण विषय की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया जो कि विगत दशकों में समाज की घटती जन्म दर से संबंधित है । पिछले तीन दशकों के जनसंख्या संबंधी आंकड़ों से यह तथ्य सामने आया है कि मध्यप्रदेश में जैन समाज की जनसंख्या वृद्धि दर अन्य समुदायों की तुलना में सबसे कम है (तालिका 1 देखें)

इसके परिणाम स्वरुप पहले से ही अल्पसंख्यक घोषित जैन समाज की जनसंख्या में और तेजी से कमी आने की संभावना है । पूर्व में इसी संदर्भ में मई 2017 में इन्दौर स्थित कुंद कुंद ज्ञानपीठ में आयोजित क्षु. जिनेन्द्र वर्णी व्याख्यान माला के अंतर्गत भारत सरकार के जनसंख्या निदेशालय में उपनिदेशक का दायित्व निभा रहे श्री धीरजजी जैन ने अपने विस्तृत व्याख्यान में मध्यप्रदेश और विशेषकर इन्दौर की जनसंख्या के संबंध में आंकड़ों द्वारा विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला था । उन्होंने भी आशंका जताई कि यदि जनसंख्या दर में इसी तरह गिरावट जारी रही तो आगामी वर्षों में पारसी समुदाय के समान हमारी जनगणना भी रोकी जा सकती है ।

जनसंख्या दर में यह कमी अचानक नहीं आयी है । पिछले कुछ ही वर्षों में यह अंतर काफी अधिक बढ़ गया है । हमारे आसपास ही देखें तो जहां पिछली पीढ़ी में पांच छह बच्चे होना सामान्य होता था । हमारी पीढ़ी में एकदम से संख्या घटी और परिवार में 'हम दो, हमारे दो' बच्चों का नारा प्रसिद्ध हुआ, फलस्वरुप तीन बच्चे भी कम ही परिवारों में मिलते हैं । आज की प्रगतिशील युवा पीढ़ी में यह आंकड़ा एक बच्चे तक आ गया है । कहीं कहीं तो परिवार के नाम पर बस पति और पत्नी ही हैं जो एक भी बच्चा नहीं चाहते ।

यह स्थिति क्यों आई, इसके अनेक कारण हैं जिनमें आर्थिक कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है । आज के मंहगाई के समय में बच्चों की अच्छी परवरिश वास्तव में एक कठिन कार्य हो गया है । बच्चे के जन्म से लेकर उसका लालन पालन, शिक्षा करियर, जॉब इत्यादि बहुत अधिक खर्चीला हो गया है । शिक्षित युवा वर्ग की प्रगतिशील सोच भी छोटे परिवार को प्राथमिकता देती है । युवाओं की करियर और जॉब में बढ़ती महत्वाकाक्षाएं भी एक कारण है जिसके कारण वे परिवार की जिम्मेदारी नहीं उठाना चाहते ।

एकल परिवार में पति पत्नी दोनों के नौकरीपेशा होने से बच्चों की जिम्मेदारी उठाना उन्हें कठिन लगता है । समाज की बेटियों का अंतर्जातीय विवाह और युवक युवतियों का बाल ब्रह्मचर्य व्रत लेकर, दीक्षा लेकर संत बनना भी कुछ हद तक समाज की घटती जनसंख्या के लिए उत्तरदायी है ।

बदलता सामाजिक परिवेश, बच्चों की सुरक्षा, पढ़ाई के पश्चात रोजगार, विवाह में आने वाली समस्याएँ आदि अनेक ऐसे कारण है जिससे आज का युवा वर्ग बच्चों की जिम्मेदारियां नहीं उठाना चाहता है ।

किन्तु समाज की घटती संख्या पर चिंता भी जायज़ है । अन्य समुदायों की तुलना में जैनों 0–19 आयु वर्ग की संख्या सबसे कम है और 60+ आयु वर्ग की संख्या सबसे अधिक है । विशेषज्ञों के अनुसार पिछले दो दशकों में जनसंख्या में आई गिरावट का परिणाम अब इस रुप में दिखाई दे रहा है कि एक से बीस वर्ष आयु के बच्चे और युवा घट रहे हैं । समाज में बुजुर्गों की संख्या अधिक हो रही है, परिणामस्वरुप जापान के समान जैन समाज कुछ वर्षों बाद बुजुर्गों का समाज बनकर रह जाएगा । (तालिका 2 देखें)

जैन समाज की जन्म दर दूसरे समाजों की तुलना में काफी कम तो है ही, वहीं 0–19 वर्ष आयु समूह की वृद्धि दर नकारात्मक रुप से घट रही है (तालिका 3 देखें) । इसका एक कारण शिक्षित युवाओं का विदेशों की ओर पलायन भी है, जो कि दोहरा आघात है । बच्चों और युवा शक्ति की कमी अर्थात क्रियाशील वर्ग की कमी, काम करने वाले हाथों की कमी, आर्थिक रूप से समर्थ समूह की कमी, आदि आदि । भविष्य में इसका भयावह परिणाम यह होगा कि समाज के बढ़ते अशक्त बुजुर्ग समुदाय की जिम्मेदारियां, उनकी सेवा टहल करने वाला कौन होगा । समाज में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ जाएगी । मंदिरों में पूजा अभिषेक करने वाले कहां से आयेंगे । मुनि आर्यिकाओं की चर्या कौन पूर्ण कराएगा, उनके आहार, निहार और विहार संबंधी क्रियाएं कैसे संपन्न हो पायेंगी । युवाओं के द्वारा संपन्न किये जाने वाले अनेक ऐसे कार्य, उत्तरदायित्व संभालने की अनेकानेक समस्याएं उत्पन्न होने की आशंकाऐं जताई जा रही हैं जो निश्चय की विचारणीय है । (तालिका 3)

इन्हीं आंशकाओं के मद्देनजर इन्दौर समाज की महासभा में समाज के विशिष्ट जनों ने 'हम दो, हमारे तीन' नारा दिया है जो कुछ हद तक प्रासंगिक है । किन्तु समाज के प्रगतिशील युवा इस को कितना समर्थन देंगे या इस ओर कितना आगे बढ़ेंगे यह आगामी समय में ही पता चल सकेगा । क्योंकि सामाजिक हित में यह स्वीकार्य हो सकता है, किन्तु देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को और बढ़ाने का यह कदम सभी के गले नहीं उतरेगा । यह भी कटु सत्य है कि देश की जनसंख्या को कम करने का प्रयास सभी वर्गों को समान रूप से करना चाहिए जो कि नहीं हो रहा है । जनसंख्या नियंत्रण का दायित्व जितना जैन समाज ने पूर्ण किया है उतना अन्य समुदायों ने नहीं (तालिका 3 देखें) । जैन समाज देश की शिक्षित, समर्थ और साधन संपन्न समाज है । अल्पसंख्यक होने के बावजूद हम आत्मनिर्भर हैं । देश के समग्र विकास में जैन समाज अपनी महती भूमिका निभाने में सक्षम है । इस नाते हमें अपनी जनसंख्या बढ़ाने के अन्य विकल्प भी सोचना चाहिए ।

समाज के आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों में युवाओं को कम से कम दो या तीन बच्चों को जन्म देने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है । आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों के बच्चों के पालन पोषण और शिक्षा, रोजगार और विवाह आदि के लिए समाज की ओर से आर्थिक सहायता के लिए स्थायी कोष बनाया जाए ।

अपना परिवार बढ़ाने के साथ साथ हम अनाथ बच्चों को गोद लेकर भी यह कार्य कर सकते हैं । नई संतान को जन्म देने के बजाए एक जन्मे हुए बच्चे को अपना नाम, अपना धर्म देना भी उतना ही पुण्य कार्य होगा ।

जैन अनाथाश्रमों को निर्माण और विकास किया जाए जिसमें पलने बढ़ने वाले बच्चों को कानूनन जैन संस्कार और नाम दिया जा सके । (इसकी कानूनी समीक्षा जरुरी है) । प्रतिदिन शहर में लावारिस शिशु सड़कों पर, झाड़ियों में मिल रहे हैं । एक संस्था के रूप में हम उन्हें सहारा देकर मानवता का भला कर सकते हैं । यदि हम अपना दिल बड़ा कर सकें तो यह एक उत्तम समाधान हो सकता है । हमारे धर्म का मूल सिद्धांत भी यही कहता है कि मनुष्य केवल जन्म से नहीं कर्म से जैन बनता है । तो आइए हम सब मिल कर ऐसे ही कुछ कारगर प्रयास करें ।

– अनुपमा जैन, सह संपादिका

तालिका – 1

आयु वर्ग	पुरुष				महिला			
	2011	2001	अंतर	प्रतिशत	2011	2001	अंतर	प्रतिशत
0-4	2087	2331	-244	-10.5	1868	2104	-236	-11.2
5-9	2286	2597	-311	-12.0	2060	2344	-284	-12.1
10-14	2726	2942	-216	-7.3	2369	2596	-227	-8.7
15-19	2943	2952	-9	-0.3	2514	2555	-14	-0.5
टोटल	10042	10822	-780	-7.2	8838	9599	-761	-7.9

तालिका – 2

अनुपात (प्रतिशत)	आयु-समूह (वर्षों में)		
	0-19	20-59	60+
हिन्दू			
कुल	37.6	54.2	8.2
पुरुष	38.4	53.9	7.7
महिला	36.8	54.4	8.8
मुस्लिम			
कुल	43.5	49.4	7.1
पुरुष	43.9	49.2	6.9
महिला	43.1	49.5	7.4
जैन			
कुल	26.3	60.7	13.0
पुरुष	27.5	59.5	13.0
महिला	25.1	62.0	12.9

तालिका – 3

आयु वर्ग	दशकीय वृद्धि दर (2001–2011) प्रतिशत में		
	हिन्दू	मुस्लिम	जैन
सभी आयु	32.0	44.6	13.7
0-4	13.5	34.4	-10.8
5-9	80.1	23.3	-12.0
10-14	14.5	23.2	-8.0
15-19	29.1	40.4	-0.4
20-24	32.9	52.6	0.30

इन्दौर समाज में निर्माणाधीन मंदिरजी में मुक्त हस्त से सहयोग करें -

कोमलचंद जैन, इन्दौर । इन्दौर गोलालारीय समाज द्वारा गतवर्ष 29.04.18 को नवीन मंदिरजी निर्माण हेतु एम.आर. 10 के नजदीक ग्राम कुम्हेड़ी में भूमि शुद्धि का कार्यक्रम आयोजित किया गया था । जिसमें ब्र. अनिल भैयाजी और ब्र. अभय भैया 'आदित्य' के निर्देशन में समाजजनों की उपस्थिति में मांगलिक क्रियायें संपन्न करायी गयी थी । इस अवसर पर समाज जनों ने अपनी यथाशक्ति अनुसार बोलियां लेकर मंदिरजी निर्माण में आर्थिक सहयोग दिया । भूमि शुद्धि के पश्चात निर्माण कार्य निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है । मंदिरजी में अभी वेदीजी का निर्माण, शिखर निर्माण, फर्श पर संगमरमर व अन्य छोटे बड़े कई कार्य होना शेष है जिसे आप आर्थिक सहयोग प्रदान कर पूर्ण करा सकते है । आप चाहे तो अपने परिवार की ओर से एक मुश्त राशि प्रदान कर इस कार्य को संपन्न करा सकते है । दानराशि को आप किश्तों में भी जमा करा सकते है । आप चाहे तो लोहा, सीमेंट, रेती, गिट्टी, दरवाजों के लिए लकड़ियां, फर्श के लिए मार्बल व मंदिरजी के स्तंभों के लिए पत्थरों के रुप में भी दान कर सकते है । समाज द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि 21000/– से अधिक की राशि दान करने वाले सदस्यों नाम शिलालेख पर अंकित जावेगा । मंदिर परिसर से कुछ ही दूरी पर 27000 वर्गफीट की एक भूमि समाज द्वारा कुछ वर्ष पूर्व मांगलिक भवन व होस्टल इत्यादि उपयोग के लिये खरीदी गई थी । इस भूमि को खरीदने में इन्दौर गोलालारीय समाज के अनेको परिवारों ने बढ़ चढ़कर आर्थिक सहयोग प्रदान किया था । समाज के स्थायी न्यासी श्री रमेशचन्द्रजी के सहयोग से इस महत्वपूर्ण कार्य को मूर्तरूप दिया जा सका है । भविष्य में विवाह समारोह को आयोजित करने के लिए इस परिसर को विकसित कर समाज सदस्यों को न्यूनतम शुल्क पर किराये पर देने के साथ इस भूमि पर समाज हित को ध्यान रख बहुपयोगी कार्य के लिए शीघ्र ही विकसित किये जाने की योजना है । जिसमें आपका सहयोग अति आवश्यक है ।